कबीर

- उनके पदों में 24 रागों का वर्णन मिलता है।
- कर्नाटकी संगीत के - पं० पुण्डरीक विट्ठल (1600 के लगभग)

- रचित ग्रंथ -
  1. सद्राग चन्द्रोदय
  2. राग माला
  3. राग मंजरी
  4. नर्तन निर्णय

- जो खानदेश के राजा बुरहान खाँ की सेवा में रहते
- अकबर के समकालीन थे।
- जिस पद्धति से अपने शुद्ध सप्तक को स्थापित किया वो दक्षिण का मुखारी मेल अथवा कनकांगी मेल ही है।
- उनका सप्तक दक्षिणी संगीत का आज भी शुद्ध सप्तक है।

रे रे ग ग ध ध नी

- सद्राग चन्द्रोदय में सर्वप्रथम 22 श्रुतियों को पं० जी ने स्वीकार किया।
- 7 शुद्ध और 7 विकृत स्वर स्वीकृत किये।
- विकृत स्वर के नाम - मधुमध्य
  " म
  " प
  साधारण - ग
  अंतर - ग
  कौशिक - नि
  काकली नि